11. एशिया के ध्रुवीय प्रदेश

इस पाठ में हम एक ऐसे प्रदेश के बारे में पढ़ेंगे जो हमारे अनुभव से बहुत अलग है। वह एक ऐसा प्रदेश है जहां कई महीने लगातार रात रहती है और कई महीने लगातार दिन। हमारे यहां जैसे वहां पर सूरज रोज सुबह उगकर शाम को डूबता नहीं है। क्या तुम ऐसी जगह के बारे में कल्पना कर सकते हो? वहां इतनी ठंड पड़ती है, इतनी ठंड पड़ती है कि चारों तरफ बर्फ ही बर्फ जमी रहती है। ज़मीन पर बर्फ, झीलों पर बर्फ, नदियों पर बर्फ और पूरा सागर का सागर ही बर्फ बना रहता है।
एक बार इस पाठ में दिए चित्रों को ध्यान से देखो और बताओ इनसे ध्रुवीय प्रदेश के बारे में क्या-क्या पता चलता है।

कहां है ध्रुवीय प्रदेश?

तुमने ग्लोब पर उत्तरी और दक्षिणी ध्रुवों को देखा था। ध्रुव के आसपास के इलाके को ध्रुवीय प्रदेश कहते हैं। इस पाठ में हम उत्तरी ध्रुवीय प्रदेश के बारे में पढ़ेंगे।

मानचित्र-1 को देखो। इसमें पृथ्वी पर उत्तरी ध्रुव और उसके आसपास के इलाकों को दिखाया गया है। पूरे ध्रुवीय प्रदेश को हल्के से रंगा गया है। इस इलाके की सीमा कैसे बनी है - देखो। इस सीमा को ध्रुवीय वृत्त कहते हैं। चलो हम इसी प्रदेश को और करीब से देखें। मानचित्र - 2 में ध्रुव के चारों ओर एक बड़ा सा सफेद क्षेत्र दिख रहा है। वास्तव

मानचित्र 1. पृथ्वी पर ध्रुवीय प्रदेश

इस मानचित्र में स्थल या ज़मीन को कैसे दिखाया गया है? क्या तुम ध्रुवीय वृत्त (घेरे) के अन्दर पड़ने वाले ज़मीन के हिस्से को अलग पहचान पा रहे हो?

यह ध्रुवीय प्रदेश में आने वाली ज़मीन है। इसमें कितने महाद्वीपों के हिस्से हैं बताओ।

में यह सफेद हिस्सा एक विशाल बर्फ का इलाका है। यह आर्कटिक महासागर का वह हिस्सा है जो साल भर बर्फ के रूप में जमा रहता है। इस मानचित्र में तुम और क्या-क्या पहचान पा रहे हो?

इन सभी महाद्वीपों का उत्तरी हिस्सा जो ध्रुवीय वृत्त के अन्दर आता है, जहां अधिक ठंड होती है, टुंड्रा प्रदेश कहलाता है। इस तरह टुंड्रा प्रदेश कोई अलग देश नहीं है, इसमें बहुत से देशों के हिस्से हैं। इस प्रदेश में हमारे यहां जैसे पेड़-पौधे नहीं होते हैं - केवल एक खास तरह की वनस्पति होती है जिसे "टुंड्रा वनस्पति" कहते हैं। इसी से इस प्रदेश का नाम पड़ा है।

मानचित्र 2. ध्रुवीय प्रदेश

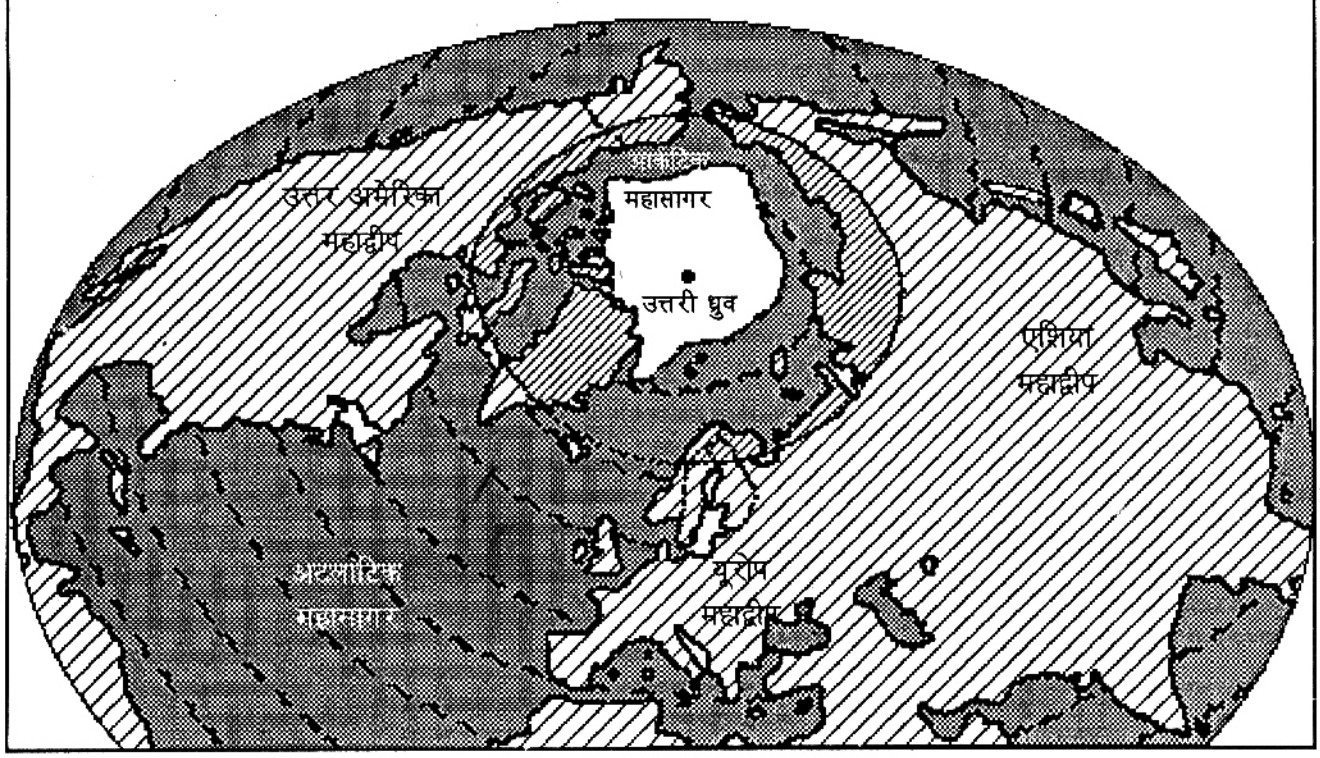

मानचित्र 3. एशिया के टुंड्रा प्रदेश

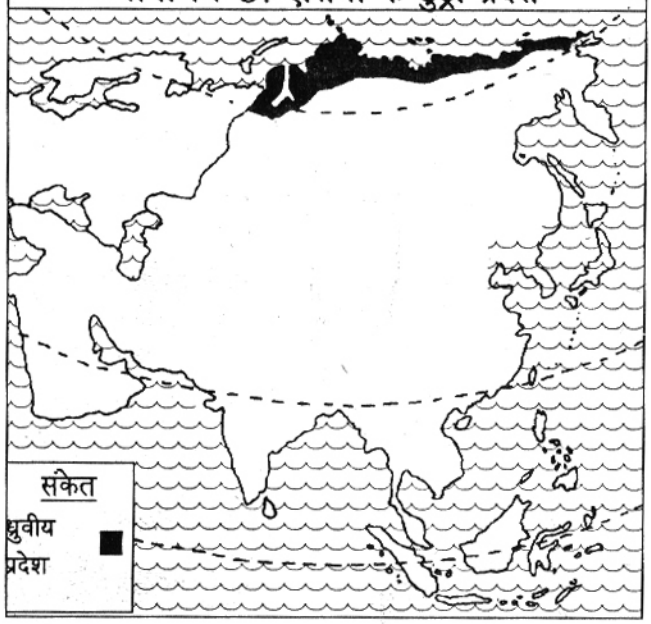

एशिया का जो हिस्सा टुंड्रा प्रदेश में शामिल है, उसे मानचित्र 3 में काले रंग से दिखाया गया है।

यह हिस्सा कौन से देश में है?

नक्शे में इंडोनेशिया, भारत और जापान भी पहचानो और देखो कि टुंड्रा प्रदेश इन सब से ज़्यादा उत्तर में है, भूमध्य रेखा से बहुत दूर, बिलकुल ध्रुव के पास।

तुम याद करके बताओ कि भूमध्य रेखा से दूर जाने पर क्या होता है?

टुंड्रा प्रदेश - गर्मी और सर्दी

टुंड्रा प्रदेश की सबसे प्रमुख बात है यहां की ठंड। यहां इतनी ठंड होती है जिसका अंदाज़ा लगाना कठिन है। यहां इतनी ठंड पड़ती है कि पानी बर्फ बना रहता है। सिर्फ तीन चार महीने यहां का मौसम कुछ गर्म रहता है और बर्फ पिघलती है।

सर्दी

सूर्य का प्रकाश बहुत कम मिलने के कारण ही टुंड्रा प्रदेश में इतनी ठंड पड़ती है। यहां साल में दो-तीन महीने सूर्य उगता ही नहीं है। अपने देश में सूर्य रोज सुबह उगता है और शाम को ढलता है। लेकिन टुंड्रा प्रदेश में ऐसा नहीं होता है। यहां नवंबर-दिसंबर और जनवरी भर में लगभग अंधेरा रहता है - सूरज उगता ही नहीं। यह टुंड्रा प्रदेश का सर्दी का मौसम है। इन महीनों में कड़ाके की ठंड पड़ती है। तुम जानते होगे कि जब खूब ठंड पड़ती है तो पानी बर्फ बन जाता है। जिस ठंड में पानी बर्फ बन जाता है उससे भी ज़्यादा ठंड टुंड्रा प्रदेश में पड़ती है। जब ऐसी ठंड पड़ती है तो नदियां, झीलें, और समुद्र तक सब जम जाते हैं। तेज़ बर्फीली हवाएं चलती हैं। रूईनुमा बर्फ के कण कई दिनों तक गिरते रहते हैं। इसे 'हिमपात' कहते हैं।

तेज ठंड, अंधेरा और बर्फ के कारण सभी वनस्पति मर जाती हैं। जानवर और पक्षी तक इस प्रदेश को छोड़कर चले जाते हैं। चारों तरफ अंधेरा, वीरान और उजाड़ प्रदेश हो जाता है।

गर्मी

फरवरी-मार्च के महीनों से टुंड्रा प्रदेश में सूरज चमकने लगता है। शुरू में सूरज दिन में एकाध घंटे चमक कर डूब जाता है। फिर धीरे-धीरे दिन लंबे होते जाते हैं - 2 घंटे, 6 घंटे, 8 घंटे, 16 घंटे, 20 घंटे और 24 घंटे! हां वहां मई-जून-जुलाई, लगभग तीन महीने सूरज डूबता ही नहीं है - 24 घंटे चमकता रहता है। तब लगातार दिन रहता है। लेकिन सूरज आकाश में ऊपर नहीं चढ़ता है। बस

क्षितिज के कुछ ऊपर चारों तरफ घूमता रहता है - न ऊपर चढ़ता न अस्त होता है। ('क्षितिज' यानी जहां धरती और आकाश मिलते हुए दिखते हैं) सूरज ऊपर नहीं चढ़ता है, इसलिए गर्मी बहुत कम पड़ती है। इस तरह कई महीनों का दिन और कई महीनों की रात ध्रुवीय प्रदेश की विशेषता है। ध्रुव पर तो छह महीने दिन और छह महीने रात रहती है।

गर्मी के तीन महीनों में भी बहुत ठंड रहती है। सर्दी के महीनों की तुलना में ज़रूर ठंड कम हो जाती है। इस हल्की गर्मी के कारण गर्मी के महीनों में कुछ बर्फ पिघल जाती है। नदियां जो सर्दी में जम जाती हैं, अब पिघलकर बहने लगती हैं - झीलें भर जाती हैं, सागर में बर्फ के बड़े-बड़े टुकड़े टूट-टूटकर बहने लगते हैं।

ठंड के महीनों में जो वीरान बर्फीला प्रदेश था वह गर्मी में जीवंत हो जाता है और रंगों से भर जाता है। गर्मी के आते ही अनेकों रंग-बिरंगे पौधे, लाइकेन नाम की काई, घास, छोटी झाड़ियां, बेरियां और बौने पेड़ उग आते हैं। इन पर रंग बिरंगे फूल और फल लगते हैं। इन्हें खाने के लिए कई तरह के जानवर और पक्षी आते हैं।

वनस्पति

अगले पृष्ठ पर टुंड्रा प्रदेश के दो चित्र दिए गए हैं - एक सर्दी का और एक गर्मी का। कौन सा चित्र किस मौसम का है पहचानो। दोनों चित्रों को ध्यान से देखो - क्या इनमें तुम्हें पेड़ दिख रहे हैं? क्या पूरे इलाके में पौधे घने उग रहे हैं?

अत्यधिक ठंड के कारण टुंड्रा प्रदेश में सतह के

चित्र 2 बर्फ की चट्टानों से घिरा जहाज़। बर्फ पिघलकर टूटने लगी है

नीचे की मिट्टी साल भर पत्थर सी जमी रहती है। जहां भी मिट्टी इकट्ठी हो जाती है, वहां ऊपर बताई काई व पौधे उगते हैं। नीचे की मिट्टी कठोर होने के कारण यहां पेड़ बढ़ नहीं पाते हैं। पेड़ बढ़े भी तो यहां चलने वाली तेज़ तूफानी हवाओं के कारण टूट जाते हैं। इसलिए टुंड्रा प्रदेश अधिकतर वृक्षविहीन प्रदेश है।

चित्र 5. टुंड्रा प्रदेश में होने वाले पेड़ों की ये हालत होती है! ये बौने पेड़ चट्टानों की दरारों में उग आते हैं पर उन्हें ज़मीन पर ऐसे रेंगना पड़ता है!

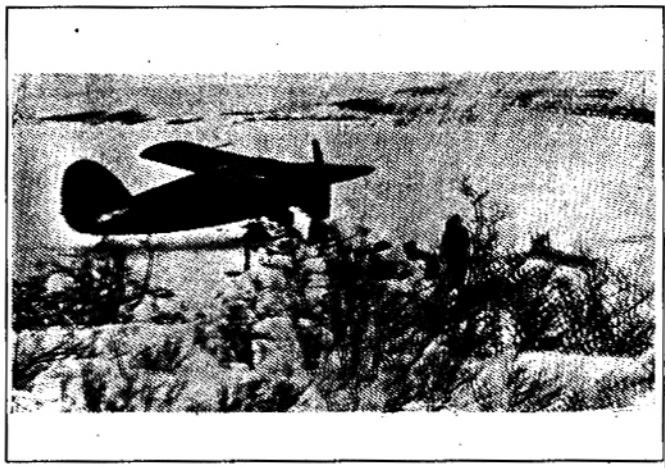

चित्र 4,5. इनमें से कौन सा चित्र गर्मी का है और कौन सा सर्दी का?

टुंड्रा प्रदेश के गर्मी के मौसम के बारे में पांच सबसे मुख्य बातें लिखो।

रिक्त स्थान भरो:

टुंड्रा प्रदेश में ------, ------ व ------ महीनों में सूरज दिखता नहीं है।

तब सब पानी ------ हो जाता है और पौधे ------ हैं।

ठंड के उन महीनों में टुंड्रा प्रदेश में उजाला कैसे मिलता होगा, सोचकर बताओ।

जानवरों पर निर्भर लोग

तुम्हें शायद लगता होगा कि ऐसी जगह लोग नहीं रह सकते हैं। आश्चर्य की बात है कि ऐसी जगह भी हम जैसे लोग रहते हैं। एशिया के इस प्रदेश के लोग याकुत, चुक्ची और सेमीयाड नाम से जाने जाते हैं। वैसे टुंड्रा प्रदेश अधिकतर खाली है - यहां रहने वाले लोगों की संख्या बहुत कम है।

ये लोग यहां कैसे रहते होंगे - क्या खाते पीते होंगे? इतने ठंडे और बर्फीले प्रदेश में खेती करना तो असंभव है। पेड़-पौधे यहां बहुत कम उगते हैं और वह भी दो तीन महीनों के लिए।

अपने यहां हम पेड़-पौधों पर ज़्यादा और जानवरों पर कम निर्भर हैं। हमारा मुख्य भोजन पौधों से आता है। हम जलाने के लिए पेड़ों से लकड़ी तोड़ लाते हैं। झोपड़ी, घर बनाने में भी लकड़ी का इस्तेमाल करते हैं। पहनने के लिए कपास का उपयोग होता है। मगर टुंड्रा प्रदेश में इसके विपरीत है। वहां के लोगों का जीवन जानवरों पर ही निर्भर है। यह कैसे आगे देखते हैं।

चुक्ची लोगों का जीवन

चलो टुंड्रा प्रदेश में रहने वाले चुक्ची लोगों के बारे में जानें। रूस के उत्तर-पूर्वी छोर पर आर्कटिक महासागर के किनारे कई छोटी-छोटी बस्तियां हैं। इनमें चुक्ची लोग रहते हैं। इनका मुख्य काम है जानवरों का शिकार करना। आसपास कहीं भी खेती नहीं होती है।

गर्मी के दिनः चुक्ची लोगों को गर्मियों के दिन बहुत अच्छे लगते हैं। पूरी बस्ती सुबह-सुबह उठ जाती है। चारों ओर उजाला रहता है, धरती से बर्फ की सफेद चादर हट जाती है और रंग-बिरंगे पौधे उगते हैं। तरह-तरह की चिडिया चहचहाती हैं। घास चरने आने वाले जानवरों का शिकार आसान हो जाता है। समुद्र पर भी बर्फ पिघलती है तो समुद्र के बड़े-बड़े जानवर सैर करने निकलते हैं। ऐसे में शिकारियों को खुशी नहीं होगी क्या?

पिघले हुए समुद्र में वालरस नाम के भीमकाय जानवरों की गुर्राहट सुनाई देने लगती है। वालरस के बड़े-बड़े झुंड समुद्र में तैरते मिलते हैं। सील, व्हेल मछली आदि भी समुद्र में खूब दिखने लगती हैं।

चुक्ची लोग समुद्र के इन जानवरों का खूब शिकार करते हैं। ये जानवर उनके जीवन का आधार हैं।

चित्र 7 वालरसः हाथी की तरह इस के दो बड़े-बड़े दांत होते है, और लंबी-लंबी मूंछ होती है। एक नर वालरस का वज़न 1000 किलो से भी अधिक होता है। इतना भारी भरकम होने के बावजूद भी यह जानवर चतुराई से तैरता है। अपनी मूंछ से यह कीचड़ को छानकर पानी में रहने वाली मछलियों को खाता है। वालरस बड़े-बड़े झुंडों में साथ रहते हैं।

चुक्ची लोग वालरस की गुर्राहट सुनने के लिए कान लगाए रहते हैं। जैसे ही किसी के कान में वह आवाज़ पड़ी कि वह चिल्ला-चिल्ला के सब को चेता देता है। लोग अपनी बंदूकें व हारपून लेकर अपनी नावों की ओर दौड़ पड़ते हैं। पुराने समय में बंदूकों की जगह तीर-कमान से शिकार किया करते थे। उनकी नावें वालरस की खाल को हड्डी के ढ़ांचों पर मढ़ के बनाई जाती थीं और खाल की पाल से ही समुद्र में चलती थीं। इन नावों को बिदारका कहते हैं। पर अब उनके पास मोटर वाली नावें भी हैं। ये मज़बूत हैं और तेज़ चलती हैं। इनमें ज़्यादा शिकार ढो कर लाया जा सकता है और तेज़ी से शिकार का पीछा भी किया जा सकता है। बिदारका में तो दो वालरस से ज़्यादा भर के नहीं ला सकते हैं।

चित्र 6 चुक्ची बस्ती

बंदूक से वालरस या सील मारने के बाद चुक्ची लोग शिकार पर हारपून फैकते हैं। हारपून जानवरों की लंबी हड्डियों से बना होता है। इसके एक सिरे पर हड्डी का कांटा होता है

चित्र 8 वालरस की खाल उतार रहे हैं

और दूसरे सिरे पर लंबी रस्सी बंधी होती है। यह रस्सी भी जानवरों की खाल की बनी होती है। हारपून का कांटा मरे हुए जानवरों के शरीर में अटक जाता है और रस्सी से खींच कर जानवर को नाव पर चढ़ा लिया जाता है। समुद्र में शिकार करने के लिए हारपून बहुत ज़रूरी औज़ार है। कभी-कभी समुद्र में व्हेल नाम की भीमकाय और खतरनाक मछली भी मिलती है।

चुक्ची लोग शिकार को तट पर लाकर उसकी खाल निकाल देते हैं। (चित्र 8) खालें साफ करके सुखाके पहनने, ओढ़ने, बिछाने, तंबू बनाने, नावें और ज़मीन पर चलने वाली गाड़ियां बनाने के काम आती हैं। सील का वसा जलाकर रोशनी करने के काम आता है। चुक्ची लोग कोशिश यही करते हैं कि गर्मियों में ज़्यादा से ज़्यादा शिकार करके सर्दियों के लिए मांस जमा कर लिया जाए। ठंड और बर्फ में मांस जम कर सुरक्षित बना रहता है।

सर्दी के दिन

सूरज जैसे-जैसे गायब होता है, ठंड बहुत बढ़ती जाती है। समुद्र का पानी जमने लगता है। नदियां व झीलें बर्फ बन जाती हैं। ठंडी, बर्फीली हवाएं बहने लगती हैं। इन हवाओं के साथ बर्फ की आंधी चलती है और ज़मीन, चट्टान, तंबू, नाव, गाड़ी सब पर बर्फ बिछने लगती है। (चित्र 9) गर्मियों में उगी झाड़ियां, काइयां - सब सफेद बर्फ में दब जाती हैं।

लोग अपने तंबुओं में सील की चर्बी जला कर उसके चारों ओर बैठे रहते हैं। बाहर निकलना भी खतरनाक हो जाता है। तेज़ बर्फीले तूफान में कोई बाहर हो तो हवा उसे लुढ़काकर ले जाती है और बर्फ में दबा देती है। कितने ही लोग ऐसे तूफान

चित्र 9 सब के ऊपर बर्फ!

में फंस कर मर जाते हैं। तूफान में बर्फ उड़ती रहती है और आगे कुछ दिखाई नहीं दे पाता। लोग रास्ता भटक कर पहाड़ियों से गिर कर भी मर जाते हैं।

ऐसे दिनों में शिकार पर निकलना भी नहीं हो पाता। बर्फीले समुद्र में वालरस भी नहीं मिलते। हां जब तूफान न हो और चांद निकला हो तब लोग सील और लोमड़ियों व भालुओं का शिकार करने निकलते हैं।

सील मछली पानी में रहती है। लेकिन पानी की ऊपरी सतह बर्फ बन जाती है। सील सांस लेने के लिए बर्फ में बने छेदों के पास आती है। तभी घात लगाकर बैठे लोग उसका शिकार कर लेते हैं। कई-कई दिनों तक शिकार नहीं भी मिलता है। तब वालरस के जमे हुए, जकड़े हुए मांस को कुल्हाड़ियों से काट कर लोग खाते रहते हैं।

बर्फीले मैदानों में चुक्ची लोग लोमड़ियों के लिए मांस का दाना डाल कर फंदा बिछाते हैं। बीच-बीच में जाकर देखते हैं कि कोई लोमड़ी फंसी कि नहीं। यहां की लोमड़ी, भालू आदि की मुलायम सफेद या लाल रोएंदार खाल व्यापार के काम आती है। सर्दियों भर चुक्ची लोग ये खालें इकट्ठी कर के रखते रहते हैं।

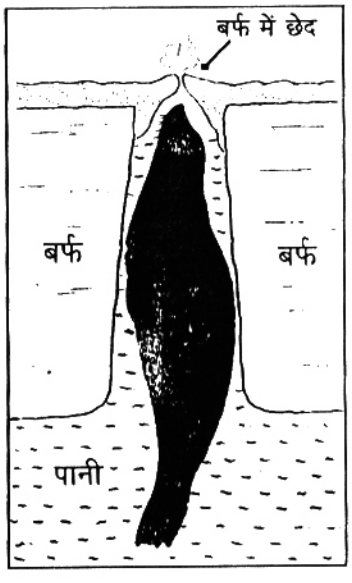

चित्र 11 सांस लेने ऊपर आई सील मछली। इसकी खाल बहुत गर्म व मुलायम होती है। सील की चर्बी का भी उपयोग किया जाता है

चित्र 10 बर्फीले तूफान में

फिर गर्मियों में बेच देते हैं। गर्मियों में मौसम ठीक रहता है और समुद्र से जहाज़ भी टुंड्रा प्रदेश तक आ सकते हैं। हवाई जहाज़ों का आना भी आसान होता है। इसलिए गर्मियों में व्यापार का काम ज़्यादा हो पाता है। खालों के बदले में चुक्ची लोग अपनी ज़रूरत की कई चीज़ें जैसे अनाज, बंदूकें, चाय, तंबाकू, चाकू, कुल्हाड़ियां आदि खरीद लेते हैं।

टुंड्रा प्रदेश के लोग किन-किन जानवरों का शिकार करते हैं?

वालरस का शिकार किस मौसम में होता है?

वालरस से चुक्ची लोगों को क्या-क्या मिलता है?

चुक्ची लोग ———— (घर /गुफा/तंबुओं) में रहते हैं।

वे ज़रूरी सामान खरीदने के लिए ——(सील/ वालरस का मांस/रोंएदार खाल) बेचते हैं।

चित्र 12 ध्रुवीय भालू: बर्फ पर रहने वाला यह भालू बिलकुल सफेद रोएंदार खाल का होता है और बहुत ही खतरनाक होता है। इसकी खाल के लिए इसका खूब शिकार किया जाता है

पशुपालन

टुंड्रा प्रदेश के कई लोगों ने रेनडियर को पालतू बना लिया है। यह हिरण जैसा सींगदार जानवर है।अधिकतर रेनडियरपालक 100-150 रेनडियर रखते हैं। रेनडियर इन लोगों के जीवन का एक प्रमुख साधन है। यह वहां की गाड़ी खींचता है, इस पर सवारी की जाती है और इसका मांस खाया जाता है। इसकी खाल से तंबू व नावें बनती हैं और इसकी हड्डियों से औज़ार भी बनते हैं।

तुम्हें अब तक स्पष्ट हो गया होगा कि इनका जीवन इनके जानवरों पर ही निर्भर है। रेनडियर, व अन्य जानवरों की रोएंदार खाल से इन लोगों के कपड़े बनते हैं। चित्र 8, 9 व 10 को देखकर तुम अंदाज़ लगा सकते हो कि टुंड्रा प्रदेश के लोगों के कपड़े कैसे होंगे। उनके कपड़े, जूते, मोजे, टोपी सब रोएंदार खाल के ही होते हैं।

रेनडियरपालक एक ही जगह बसकर नहीं रह पाते। चारे की तलाश में घूमते रहते हैं। वे गर्मी के मौसम में टुंड्रा प्रदेश में रहते हैं। उस समय वहां छोटे पौधे उग आते हैं। इन पर उनके रेनडियर चरते हैं। इसके अलावा अन्य कई जानवर यहां इस समय शिकार के लिए मिलते हैं। जाड़ा आने पर पूरे प्रदेश में वनस्पति मर जाती है, बर्फ जम जाती है और अंधेरा ही अंधेरा रहता है। जानवर भी इस प्रदेश को छोड़ जाते हैं। यहां के लोग भी अपने तंबू बांधकर, जानवरों को साथ लेकर दक्षिण के वनों की ओर चलते हैं।

टुंड्रा प्रदेश के दक्षिण के नुकीली पत्तियों के वनों में भी खूब ठंड पड़ती है, पर टुंड्रा प्रदेश से कम। यहां सूरज भी आसमान में दिखता है। उजाला रहता है। इस तरह दक्षिण के वनों में फिर भी जलाऊ लकड़ी, चारा और शिकार मिल जाता है। गर्मी के दिनों में ये लोग फिर टुंड्रा प्रदेश में लौट आते हैं। इस तरह इन लोगों का साल का बहुत सा समय एक जगह से दूसरी जगह घूमने में निकल जाता है। इसीलिए वे तंबुओं में रहते हैं।

चित्र पालतू रेनडियर

हमने देखा कि ये लोग लगातार एक जगह से दूसरी जगह चलते रहते हैं। तो अपना सामान कैसे ढोते होंगे?

इसके लिए ये लोग बर्फ पर चलने वाली एक गाड़ी इस्तेमाल

करते हैं, जिसे स्लेज कहते हैं। यह जानवरों की हड्डियों से बनी होती है। इसमें पहिए होते ही नहीं हैं क्योंकि इसे तो आमतौर पर बर्फ पर ही खींचना होता है। स्लेज बर्फ पर फिसलती हुई चलती है। इस गाड़ी को खींचने का काम करते हैं, रेनडियर या कुत्ते। यहां के लोग इन स्लेजों पर ही यात्रा करते हैं। नीचे चित्र में देखो।

टुंड्रा प्रदेश में खदान और उद्योग

पिछले 30 वर्षों में इस प्रदेश में खनिज तेल और सोने की खदानें खुली हैं। इस कारण यहां बाहर से बहुत सारे लोग आकर बसे हैं। अब यहां बड़े-बड़े शहर भी बस गए हैं। इनके साथ शिकारी व पशुपालक लोगों के जीवन में भी बहुत परिवर्तन आए हैं। अब ये लोग पक्के घरों में रहने लगे हैं ओर आने-जाने के लिए मोटर से चलने वाली स्लेज-गाड़ियों का उपयोग करते हैं।

पर इनका जीवन अभी भी शिकार और पशुपालन पर ही आधारित है।

अभ्यास के लिए प्रश्न

1. टुंड्रा प्रदेश में दिन-रात का चक्र कैसा होता है?
2. इंडोनेशिया तथा टुंड्रा प्रदेश में तुलना करके बताओ कि दोनों जगहों पर रोज़ आकाश में सूर्य के पथ में क्या अंतर है?
3. टुंड्रा प्रदेश में कैसी वनस्पति होती है? यह प्रदेश वृक्षविहीन प्रदेश क्यों कहलाता है?
4. यहां के लोग खेती क्यों नहीं करते?
5. टुंड्रा प्रदेश के पशुपालक जाड़े में कहां चले जाते हैं, और क्यों? वे गर्मी में फिर टुंड्रा प्रदेश क्यों लौट आते हैं?
6. यहां के लोग बिना पहिए की गाड़ी क्यों बनाते हैं?
7. तुमने अब तक तीन जगहों के लोगों के बारे में पढ़ा है - इंडोनेशिया, जापान और टुंड्रा। इनमें से कहां के लोग मुख्य रूप से कारखानों पर निर्भर रहते हैं, कहां के लोग वनस्पति पर अधिक निर्भर रहते हैं और कहां के लोग जानवरों पर?
8. टुंड्रा प्रदेश में रहने वाले लोगों से मिलते-जुलते कुछ लोगों के बारे में तुमने इतिहास के पाठों में पढ़ा था। क) पुराने शिकारी मानव और टुंड्रा प्रदेश के शिकारियों में क्या-क्या समानताएं और फर्क तुम्हें दिखे। ख) पशुपालक आर्यों और टुंड्रा प्रदेश के पशुपालकों में क्या-क्या समानताएं और फर्क तुम्हें दिखे।